ता० ८ अक्टूबर सन् १९२६ दैनिक देशबन्धु

क्या आप राष्ट्र प्रेमी हैं ?

(लेखक—एक राष्ट्रवादी)

क्या आप राष्ट्र प्रेमी हैं ? यह एक ऐसा प्रश्न है जिसपर प्रत्येक मनुष्य को, जो अपने को भारतीय कहने का दम भरता है विचार करना है। यदि आप राष्ट्रप्रेमी हैं आपके हृदय में भारत राष्ट्र के लिए कुछ भी प्रेम है तो बताइए, आपने राष्ट्र के लिए, अपने देश के लिए और अपने मुल्क के लिए क्या किया है या भविष्य में अपने राष्ट्र को आगे बढ़ाने के लिए उसके दासता के जकड़े हुए बंधन को छुड़ाने के लिए आप क्या करने जा रहे हैं ? इसपर हम आज आपसे कुछ पूछना चाहते हैं !

अपने को केवल राष्ट्र प्रेमी कह देने भर से ही राष्ट्र प्रेम समाप्त नहीं हो जाता अथवा अपने आप राष्ट्र प्रेमी भाव से ही देश के प्रति आपके कर्त्तव्य की इति[illegible]श्री नहीं हो जाती ! बताइए ! एक राष्ट्र प्रेमी के लिए जो २ गुण [illegible] आवश्यक हैं, वे आप में हैं। यदि [illegible] तो क्या शीघ्र भविष्य में आप उन त्रुटियों के दूर करने जा रहे हैं ? सोचिए तो सही ! एक राष्ट्र प्रेमी के लिए देश पर न्योछावर होने की शक्ति, अथवा देश पर कुर्बान होने का माद्दा आपमें है ? समय पड़ने पर, राष्ट्र पर विपत्ति आने पर और उसके जीवन मरण का प्रश्न उपस्थित होने पर [illegible] आपने को अपनी ह[illegible]ती की और अपना

हँसते २ अपनी मातृ भूमि की इज्ज़त बचाने के लिए अपनी जान दे सकता है या यदि एक जापानी युवक अपने देश के जीवन मरण के प्रश्न उपस्थित होने पर अपने आप को गढे में ढकेल कर गड्ढा पूरा कर सकता है। तो आप क्यों उसमें असमर्थ प्रतीत होते हैं। अपने देश पर संकट आने पर यदि एक जापानी महिला अपने पुत्र की भेंट चढ़ा राष्ट्र की मदद कर सकती है तो आप क्यों नहीं पीछे हटते हैं ? सोचिए तो सही ! विश्व मंडल के मनुष्यों की भाँति आप भी ईश्वर के निर्मित मनुष्य नहीं है। फिर इतनी रुकावट क्यों है। आपकी [illegible] क्या यह [illegible] नहीं करती कि आपके हृदय म[illegible]प्रेम का भाव बिल्कुल भर गया है या यदि थोड़ा बहुत है तो वह भी मुरदे के समान है ? ऐसी अवस्था में क्या आप कभी-भी अपने गिरे हुए राष्ट्र को ऊपर उठा सकते हैं। यदि देश प्रेम का ज़रा सा भी भाव आपके हृदय में स्थान नहीं पा सकता तो क्या आप अपने को मनुष्य कहने का [illegible] भर सकते हैं।

ऐसी स्थिति में आ[illegible] है, यही विचारने की की [illegible] प अपने को मनुष्य कहने का साहस कर[illegible] हों तो आपको राष्ट्र के लिए अपने देश के लिए

मस्त[illegible]

—:o:—

'पू[illegible] मालवीय' जी जो कुछ कह दें वही ठीक है [illegible] अगर वे कह दें गिर पड़ो, तो गिर कर धूल चाटने लगना बहुत बेहतर है। अग[illegible] वे [illegible]नी को आग कह दें तो उसे बड़वानल कहना ही अच्छा है। वे कह दें कि प्रयाग में रामलीला इस साल न होगी तो कोई हर्ज नहीं—उसे यों कहना कि—[illegible]जी प्रयाग में [illegible]लीला कभी न हो—बहुत अच्छा है। [illegible]र वे कह दें स्वराजियों को खरी खोटी [illegible]ना चाहिये—तो स्वराजियों को गाली [illegible]ही सब से अच्छा है। बहरहाल जो 'प[illegible] मालवीय' जी कह दें, वही ब्रह्म वाक्य है, [illegible] 'पूज्य' है। इससे तो यही कहना पड़ता है कि—

जहाँ जायँ बाले मियाँ,
तहाँ जाय पूँछ ॥

× × ×

[illegible]भाइयो ! समझते हो 'स्वतन्त्र कांग्रेस दल' वालों ने अपने दल के नाम के साथ [illegible]ग्रेस' शब्द क्यों जोड़ लिया है ? इसी [illegible] कि जिससे वो[illegible] यह समझें कि [illegible]लोग कांग्रेस की हा[illegible] से कौंसिल के [illegible] खड़े हो रहे हैं। स्वतन्त्र दल वाले चाहते हैं कि—न साँप मरे न लाठी टूटे। पबलिक से कौंसिल में ओहदे पाने के लिये वोट ले लें,

खड़ा हुआ था। लेकिन कौंसिल चुनाव के दौरे में आप के सर में एक बार भी दर्द नहीं हुआ। प्रयाग की रामलीला करवाने में भी आपने टाल मटूल कर ही डाला। वक्त पड़ने पर जनता को धता बताना यही तो बड़े आदमी के लक्षण हैं। ऊपर का छंद ऐसे ही [illegible]

\+ × ×

'स्वराज्य पार्टी' और 'स्वतंत्र कांग्रेस दल' की भिड़न्त अजब रंग पैदा कर रही है। पूज्य मालवीय जी अपने 'ओहदे-सोहदे' प[illegible] लट्टू हैं। मस्तराम की समझ में बहुत [illegible] आता है कि पूज्य मालवीय जी [illegible] हमेशा ही क्यों एक न एक अड़[illegible] पड़ने पर लगा देते हैं लोग कहते हैं [illegible] बड़े राजनीतिज्ञ हैं। सो भाई बेशक [illegible] 'बावन तोले पाव रत्ती' का भी फर्क [illegible] लेकिन जनाब पंडित मोती लाल [illegible] जी की भी तो पुरानी खोपड़ी है वे 'स्व[illegible] कांग्रेस दल' वालों को बिना नाक चने चबवा थोड़े ही छोड़ने वाले हैं।

× × +

पंजाब केशरी लाला लाजपत राय जी को भी न जाने आज कल क्या सनक सभी है।

कुर्बान होने का मादा आपमें है ? समय पड़ने पर, राष्ट्र पर विपत्ति आने पर और उसके जीवन मरण का प्रश्न उपस्थित होने पर आप अपने को अपनी हस्ती की और अपना सर्वस्व अपने राष्ट्र के लिए सम्माननीय बलि दान कर सकते हैं। ज़रा अपने हृदय को टटोल कर देखिए तो सही क्या आप अपनी मातृ-भूमि के लिए, जिसने न केवल आपको जन्म ही दिया है, किन्तु अपने अन्नजल और वायु से आपका पालन पोषण कर रही है, समय पड़ने पर अपने आप को बलिदान कर सकते हैं। अपने हृदय पर हाथ रख कर आप ज़रा गंभीरता से इस प्रश्न का उत्तर दें।

उत्तर क्या हो सकता है, यह हम और आप सब भली भाँति जानते हैं। हम यह जानते हैं कि हमारे देश में आज निराशा के बादल चारों ओर मंडरा रहे हैं और हमें यह भी पता है कि आज हमारे और आपके हृदय में निराशा और परस्पर कलह और वैमस्य के साम्राज्य के कारण राष्ट्र उद्धार के लिए कोई स्थान नहीं बचा है! यह जानते हुए भी कि आज हम अपनी मूर्खता के कारण अपने निश्चित मार्ग से कोसों दूर हटे जा रहे हैं, बताइए आपने राष्ट्र के लिए क्या किया है? अपने भीषण रोग को भली भाँति जान लेने पर भी हमने कौन सी औषधि उसके लिए तजवीज की है [illegible] हमें, यह [illegible] दवा का प्रयोग करना [illegible] प्रकार हम मृत्यु से अपना जीवन बचाना चाहते हैं तो हमें अन्त में विवश हो अपनी रक्षा के लिए हमें कड़वी औषधि सेवन करनी होगी। बेवश होकर हमें कड़वी दवा का सेवन इच्छा न रहते हुये भी करना पड़ेगा।

ऐसी स्थिति में आप [illegible] है, यही विचारने की की [illegible] अपने को मनुष्य कहने का साहस करते हों तो आपको राष्ट्र के लिए अपने देश के लिए कुछ करना होगा! समय रहते सचेत हो जाना चाहिये और अपनी परपददलिता भारत माता के उद्धार के लिए अभी से तैयार होना चाहिये! भारत माता के यश और सम्मान के लिए ही भारी से भारी त्याग करना होगा! बोलिए! क्या आप मातृ बलिवेदी पर अपनी भेंट चढ़ाने को सहर्ष प्रस्तुत हैं! यदि नहीं तो अब विलम्ब करने से अपने पैर में कुल्हाड़ी मार कर अपने अस्तित्व को खतरे में डालना और अपने रहे सहे नाम को सदैव के लिए धो डालना है।

हाँ! तो यदि आप वास्तव में अपने टिमटिमाते दीपक के प्रकाश को उज्वल करना चाहते हैं और चाहते हैं अपने नाम को जीवित रखना तो बिना किसी विलम्ब के अपने एकमात्र संस्था राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस के नीचे आ जाइये! कांग्रेस ही ऐसी बलशालिनी अवस्था है जो देश की आवाज़ को एक स्वर से प्रदर्शित कर सके! कांग्रेस ही में इतना अपूर्व बल है कि वह आपको आपके निश्चित मार्ग स्वतंत्रता की [illegible] सके! कांग्रेस ही में इतना अलौ-[illegible] आपको आपके [illegible] प्रिय स्वत-[illegible] सके! इस लिये यदि आप अपनी और अपने भविष्य संतानों की भलाई चाहते हों तो देश की उद्धार करने वाली एक मात्र राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस को मज़बूत बनाइये। कांग्रेस को मज़बूत बनाना अपने हाथ तथा अपने संतानों को मज़बूत बनाना है। वह कौन ऐसा अधम है जो अपने तथा अपने संतानों का फलना फूलना नहीं देखना

[illegible] खड़े हो रहे हैं। स्वतन्त्र दल वाले चाहते हैं कि—न साँप मरे न लाठी टूटे। पबलिक से कौंसिल में ओहदे पाने के लिये वोट ले लें, और दिखावटी कांग्रेस के हिमायती भी बने रहें, लेकिन 'पबलिक' इस नये दल के धोके में तो आ नहीं सकती। वह उसी को वोट देगी। जिसे कांग्रेस ने खड़ा किया है। जनता की आँख में पक्षपात का चश्मा थोड़े ही लगा है।

× × ×

श्रद्धेय लाला लाजपत राय जी क्या करें [illegible] कौंसिल [illegible] लाला नहीं है। लेकिन वे भी आज कल श्रद्धेय पं० मालवीय जी के पिट्ठू बन बैठे हैं। इसी से अब मालवीय जी महाराज की हाँ में हाँ मिलाते हैं। त्यागमूर्ति पं० मोतीलाल जी नेहरू ने उन्हें स्वराज्य दल से इस्तीफा देने पर जो जवाब दिया था, उसी पर वे खीझ उठे हैं इसी से वे आजकल मालवीय जी महाराज के "चरणों के सेवक" बने हैं। जादू वह है जो सर पर चढ़ कर बोले।

× × × ×

प्रयाग के 'अभ्युदय' की तो आज कल वह हालत है जैसे कोई नया मुसलमान होने से 'अल्ला ही अल्ला' चिल्लाता है।

× × ×

आदत जो पड़ी है हमेशा से,
वह दूर भला कब होती है।
रक्खी है चुनौटी पॉकेट में,
पतलून के नीचे धोती है॥

मालवीय जी महाराज आये और लेकचर झाड़ कर चले गये। क्यों न हो भाई! बड़े की बात बड़े ही जानें। यह तो मालवीय जी महाराज की पुरानी आदत है। असहयोग

× × +

पंजाब केशरी लाला लाजपत राय जी को भी न जाने आज कल क्या सनक सूझी है। आप फ़ौरन से पेश्तर गोरखपुर पहुँचे और फरमान निकाल दिया कि वोट विडला जी को देना चाहिये। मस्तराम पूछते हैं कि विडला जी ही को सभी स्वतन्त्र दल वाले क्यों वोट देने को कहते हैं। कुछ भीतरी माजरा ज़रूर है। मस्तराम तो यही कहते हैं कि :—

रुपिया भाटिकक के फटक्कि के स्वराजियों से,
[illegible] वोट विडला को दो।

× × ×

प्रयाग में प्रथम पाखे शुक्ल पक्ष वार मंगल वारे शुभ मुहूर्त महामना मालवीय जी महाराज ने प्रयाग की रामलीला को एक वर्ष के लिये पिण्डदान देकर महाराज रामचन्द्र की आत्मा को तृप्यन्ताम' करके बिदा कर दिया। क्यों न हो भाई बड़ी खुशी की बात है। इतने बड़े पण्डित के हाथों से यह शुभ काम समाप्त हुआ। धन्य है मालवीय जी महाराज! आपको उठते, बैठते, सोते, जागते सौ सौ बार नमस्कार है। धार्मिक हो तो ऐसा हो।

× × ×

मालवीय जी महाराज कानून तोड़ने के लिये तो सत्याग्रह करते हैं। लेकिन रामलीला करवाने में न जाने क्यों डर गये। ठीक है भाई यदि मालवीय जी महाराज इधर राम की लीला में फँस जावें तो भला कौंसिल-लीला का सामान कैसे इकट्ठा होगा। इतने दिन की मेहनत ही बरबाद हो जायगी। सो इसलिये आपने सहस्त्रों आदमियों की भीड़

दवा का प्रयोग करना ... प्रकार हम मृत्यु से अपना जीवन बचाना चाहते हैं तो हमें अन्त में विवश हो अपनी रक्षा के लिए हमें कड़वी औषधि सेवन करनी होगी। बेवश होकर हमें कड़वी दवा का सेवन इच्छा न रहते हुये भी करना पड़ेगा।

आज हमारे राष्ट्र की यही भयावनी दशा है। एक मरण तुल्य रोगी की भाँति वह मृत्यु शय्या पर पड़ा हुआ दुःख में अपने जीवन को येन केन प्रकारेण बिता रहा है। कड़वी औषधि देकर उसको अच्छा करना हमारे हाथ में हैं। यदि हम मनुष्य रूपी राष्ट्र को औषधि रूपी (अपना) बलिदान दे सकें तो हमारा राष्ट्र रोग से मुक्त हो जीवन पा सकता है, यह हम भली भाँति जानते हैं। औषधि का मूल्य हमारा और अपका बलिदान है। बोलिए! क्या वह मूल्य आप देना चाहते हैं? क्यों? देश के लिए आप अपनी भेंट चढ़ा सकते हैं या नहीं। यदि एक जर्मन युवक हज़ारो आनन्द के साधन छोड़ कर ... सके! इस लिये यदि आप अपनी और अपने भविष्य संतानों की भलाई चाहते हों तो देश की उद्धार करने वाली एक मात्र राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस को मज़बूत बनाइये। कांग्रेस को मज़बूत बनाना अपने हाथ तथा अपने संतानों को मज़बूत बनाना है। वह कौन ऐसा अधम है जो अपने तथा अपने संतानों का फलना फूलना नहीं देखना चाहता। इस लिये अपनी भलाई को दृष्टि में रख कर, आप अपनी कांग्रेस को मज़बूत बनाइये, उसका हाथ बटाइये और सब प्रकार उसकी रक्षा करिये! यही समय है जबकि आपका राष्ट्र प्रेम देखा जायगा और यही समय है जब आपकी राष्ट्रीयता, आपका देश प्रेम कसौटी पर कसा जायगा? इस लिये कहीं आप उस परीक्षा में असफल न हों, अभी से आप तय्यार हो जाइये! कांग्रेस को बलशाली बनाने के लिये उसके अंगों को पुष्ट करने के लिये आप को छल कपट और प्रलोभन से बचना होगा। आज उन विद्रोहियों से जो अपने स्वार्थ सिद्धि के लिये

कांग्रेस को तोड़ना चाहते हैं, अपने को और अपनी कांग्रेस को बचाना है। इस लिये आप अभी से प्रस्तुत होजाइये, बोलिये! क्या आप कांग्रेस की, जिसने देश के एक २ झोंपड़े को स्वतंत्रता के घोष से निनादित किया है, बचाने लिये अपनी सहायता का हाथ आगे न बढ़ायेंगे? बस इसी से आपके राष्ट्रप्रेम का पता लग जायगा।

—o—

...आदत जो पड़ी है हमेशा से,
वह दूर भला कब होती है।
रक्खी है चुनौटी पॉकेट में,
पतलून के नीचे धोती है॥

मालवीय जी महाराज आये और लेक्चर झाड़ कर चले गये। क्यों न हो भाई! बड़े की बात बड़े ही जानें। यह तो मालवीय जी महाराज की पुरानी आदत है। असहयोग के ज़माने में बारडोली के पथ पर आपके सिर में बड़े ज़ोरों का खतरनाक दर्द उठ

मालवीय जी महाराज कानून तोड़ने के लिये तो सत्याग्रह करते हैं। लेकिन रामलीला करवाने में न जाने क्यों डर गये। ठीक है भाई यदि मालवीय जी महाराज इधर रास की लीला में फँस जावें तो भला कौंसिल-लीला का सामान कैसे इकट्ठा होगा। इतने दिन की मेहनत ही बरबाद हो जायगी। सो इसलिये आपने सहस्रों आदमियों की भीड़ में लेक्चर झाड़ कर और सरकार को खरी खोटी सुना कर अपने अपने घर को विदा होते भये। पंडित कृष्णकान्त मालवीय जी ने तो सभा समाप्त होते होते एक गजब की बात कह डाली कि "भाइयों! अब हमने नतीजा यह निकाला है कि सब अपने अपने घर का रास्ता लीजिये।" क्यों न हो 'उपली वाली' के मामले में सारा 'अभ्युदय' प्रति हफ्ते रंगा रहता था। लेकिन 'रामलीला' के बारे में सरकार के खिलाफ कैसे कुछ कह दें। पूज्य मालवीय जी जो कुछ कहें वही ठीक है।

—o—

(२)

मेरे किसी हितैषी ने मुझसे 'आलइन्डिया कांग्रेस कमेटी के रुपये के सम्बन्ध में जो 'नवयुग' के लिये मिले थे उसका हिसाब तलब किया है। हिसाब तलब करने वाले भाई के मेरे हितैषी होने की बात को जान कर मुझे आनन्द है और मैं उनका कृतज्ञ हूँ। परन्तु मेरे हितैषी भाई यदि वह वास्तव में मेरे हितैषी होते तो मुझे दर्शन देते, मुझसे बातें पूँछते और मै सारा बात बता देता। परन्तु उनका इस प्रकार एक पत्र का आश्रय लेना अपने हितैषी पने संदिग्धात्मिक बना देता है। अस्तु मैं उनकी बातों को सत्य मानता और उन्हें अपना हितैषी समझता ... मेरे भाई ने मुझसे हिसाब तलब करने ... न देर की। जिसको हिसाब देना चाहिये ... वालों पूर्व हिसाब ले चुका और मैं

... लिये यह असम्भव है कि मैं प्रत्येक ... हितैषी' को जिन्होंने एक भी कौड़ी ... लिये न खर्ची हो हिसाब देता

... रह गयी 'फला कहाँ का रुपया खा गये' की बात। श्रीमातारास जी मेरे हितैषी है अतएव उनसे मुझे पूरी उम्मीद है कि वह उन लोगों की सूची जो कहते हैं कि यह सेवक उनका रुपया खा गया और साथ ही उनकी भी सूची जिनसे उन धन-कुबेरों ने अपने रुपये खाने की बात कही है मेरे

... ख्यान सुनने भी गया ... ही आशा क्या जानता की आशा निराशा में परिणित होगई। मुझको यह सुन कर दुःख हुआ कि मालवीय जी सरीखे हिन्दू नेता ने इस वर्ष कोई उपाय रामलीला करने के लिये नहीं बताया। उन्होंने कहा कि प्रयाग में रामलीला न होने के कारण मुझको बहुत दुःख है। अरे भाई यह तो सभी जानते थे कि मालवीय जी को दुःख होगा। इसमें कौन सी नई बात उन्होंने रामलीला करने को कही यह मेरी समझ में ...

रामलीला उसी समय से होनी शुरू हो जायगी जब हम भाग्य पर निर्भर न रह कर पुरुषार्थ को अपनायेंगे और तार का भेजना और सभाओं में कागजों पर के प्रस्तावों का पास करना छोड़ कर सत्याग्रह का सहारा लेंगें।

—कन्हैय्या लाल कक्कड़।

—o—

वर्मा में बाढ़

तीसरी ता० को सबेरे इतनी जोर से बाढ़ आई कि रंगून और मण्डले के बीच का पुल टूट गया। रेल का आना जाना बन्द है और कई जगह रेल लाइन ... दम पहुंचा है। खबर ... ले अधिक रेलवे की ... हुई है। ...

'की ... लि ...

मांडला को बाढ़

नागपुर का समाचार है कि मांडला की बाढ़ से जान और माल की बहुत बड़ी हानि

रह गयी 'फला कहाँ का रुपया खा गये' की बात। श्रीमातारास जी मेरे हितैषी है अतएव उनसे मुझे पूरी उम्मीद है कि वह उन लोगों की सूची जो कहते हैं कि यह सेवक उनका रुपया खा गया और साथ ही उनकी भी सूची जिनसे उन धन-कुबेरों ने अपने रुपये खाने की बात कही है मेरे पास भेज देवें। अन्त में मैं श्री मातारामजी सदृश अपने हितैषी को एक बात कह देना चाहता हूँ कि अन्यायपूर्ण, असत्य तथा अपमानपूर्ण बातों का शिकार होना उचित नहीं। राजनैतिक क्षेत्र में मत भेद होंगे। उनके रहते हुए आप को तथा आप को साथ देने वाले तथा इस गन्दे मा ँ की ओर उत्साहित करने वाले भाइयों को परस्पर प्रेम, परस्पर संबन्ध न बिगड़ने पाये इसे सीखने का प्रयत्न चाहिये। अन्त में मुझे अत्यन्त खेद है कि मेरे भाई मातारास को मेरे कारण हानि है। लेकिन जब वह सार्वजनिक कार्यों में कुछ आगे बढ़ेंगे तो उन्हें मालूम होगा कि भारतीय सार्वजनिक सेवा का जहाँ अन्य बहुत पुरस्कार हैं वहाँ गाळी खाना, बेईमान बनाया जाना भी एक उत्तम तर पुरस्कार है। जब पूज्य लाजपत राय, मालवीय जी, महात्मा गाँधी, स्वर्गीय दास पर नाना प्रकार के कलङ्क लगाने वाले इस देश में जीवित हैं फिर मेरे सदृश एक तुच्छ सैनिक को कलङ्कित करने की सेवा करना ऐसे कुत्सित हृदयों के लिये बाएँ हाथ का खेल है। परन्तु मैं अपने 'हितैषी' जी को विश्वास दिलाता हूँ कि ऐसे झूठे कलंक मुझे कुचल नहीं सकते, मुझे कलंकित नहीं कर सकते। मैं अपने सेवा-मार्ग पर मजबूत हूँ, और ऐसे गर्द व गुबार मुझे उस पथ से विचलित नहीं कर सकते। मैं हाल में एक पत्र प्रकाशित करा चुका हूँ कि मैं स्वराज्य पार्टी के कुछ गन्दे सदस्यों के गन्दे उद्गारों के चक्कर में पड़ कर अपना ...

... टूट गया। रेल का आना जाना बन्द है और कई जगह रेल लाइन ... पहुंचा है। खबर ... अधिक रेलवे की ... हुई है।

मांडला की बाढ़

नागपुर का समाचार है कि मांडला की बाढ़ से जान और माल की बहुत बड़ी हानि हुई है। वहाँ के लोग प्राण बचने के लिये पेड़ों पर चढ़ गये थे और तीन तीन दिन तक उपवास करते रहे। अफसर लोग बंगलों को खाली कर दिये थे। मिस्टर सी० के० सीमन डिप्टी कमीशनर भी अपने बच्चों सहित पेड़ रहे।

गुजरात की बाढ़

गुजरात में पानी अधिक बरसने के कारण खेती को बहुत नुकसान हुआ। खासकर सर्द की फसल बरबाद होगई।

जबलपुर में बाढ़

बाबू श्यामसुन्दर भार्गव आनरेरी सिक्रेटरी फ्लड रीलीफ फंड तार द्वारा अपील करते हैं कि नर्बदा नदी के बढ़ जानेसे बहुत से गाँव बह गये हैं। हजारों आदमी बिला घर और ठिकाने के हो गये हैं। उनके गाय बैल और बर्तन इत्यादि कुछ भी नहीं बचे हैं। इसलिये चन्दा जल्द भेजना चाहिये।

वाडिया ब्रादर्स का दान

वाड़िया ब्रादर्स ने १६ लाख रुपया बम्बई में नया अस्पताल खोलने के लिए दान दिया है।

अजीब दुनियां

—अफ्रीका में एक किस्म का छछूँदर पाया जाता है जिसकी नाक हाथी के सूँड़ समान लम्बी और आँखें चूहे से कुछ ही बड़ी के होती है।

—हिमालय के पास छछूँदरों की एक

मुझे कुचल नहीं सकते, मुझे कलंकित नहीं कर सकते। मैं अपने सेवा-मार्ग पर मजबूत हूँ, और ऐसे गर्द व गुबार मुझे उस पथ से विचलित नहीं कर सकते। मैं हाल में एक पत्र प्रकाशित करा चुका हूँ कि मैं स्वराज्य पार्टी के कुछ गन्दे सदस्यों के गन्दे उद्गारों के चक्कर में पड़ कर अपना बहु मूल्य समय नष्ट नहीं करूँगा।

—गौरीशंकर मिश्र।

नोट--खेद है कि स्थानाभाव से मिश्र जी का पूरा पत्र नहीं दिया जा सका पर ऊपर जो अंश दिया गया है उस में सबका तात्पर्य्य आ गया है। --सं० 'देशबन्धु'।

श्रीमान् सम्पादक जी,

देशबन्धु के पिछले अंकों में रामलीला सम्बन्धी लेखों को पढ़कर जनता में कुछ नई स्फूर्ति पैदा होगई थी और रामलीला होने की आशा जनता में होगई थी और इसी कारण पंडित मदन मोहन मालवीय जी को ऐसे अवसर पर पधारने का अनुरोध किया गया था। मैं समझता था कि मालवीय जी रामलीला करने को कहेंगे और ज़रूर कहेंगे।

अजीब दुनियां

—अफ्रीका में एक किस्म का छछूँदर पाया जाता है जिसकी नाक हाथी के सूँड़ समान लम्बी और आँखें चूहे से कुछ ही बड़ी के होती है।

—हिमालय के पास छछूँदरों की एक ऐसी जाति पायी जाती है जो पानी में अच्छी तरह तैर सकती है।

—जीवार्ट नाम के एक जर्मन इंजीयर ने एक पहियेदार खड़ाऊँ बनायी है जिस पर खड़े होकर गैल के सहारे २२ मील प्रति घन्टे की चाल से सफर की जा सकती है।

—एक वैज्ञानिक ने हिसाब लगाया है कि २३७० कीड़ों का बनाया हुआ रेशम आध सेर होता है।

—मिश्र देश की राजधानी काहिरा में दिन में सूर्य की किरणें इकट्ठी कर ली जाती हैं जिनसे रात्रि के अवसर पर रोशनी का काम लिया जाता है। अफवाह है कि बीकानेर नरेश भी अपने राज्य में इसी किस्म का प्रबन्ध करने वाले हैं।

पं० सत्यधान शर्म्मा के प्रबन्ध से सुदर्शन प्रेस, प्रयाग में मुद्रित और प्रकाशित।